

दू टा कावता

एक

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

सुनलहूँ अछि—

मनुष्यक उत्पादन आव बन्द रहत ।
अन्तरराष्ट्रिय महिलावर्ष उपलक्ष अछि,
तँयो ई ब्रह्मा परम्पराकेँ नहि छोड़ैत छथि,
रखने छथि साँचा दू तरहक बनवाय
एक पुरुषक फराक, दोसर महिलाक फराक कऽ
चीनीकेर भाव जेना
राशन दोकानबला दोसर
आ खुलतामे दोसरे रहैत अछि ।
साफ-साफ पक्षपात-पूर्ण हुनक नीति थिकनि,
तकरे विरुद्ध रिट याचिका छलनि भेल
स्वर्गक हाइकोर्टमे सुनबाहि तकर भेलनि अछि ।
(श्री फल्लौ कान्त बाबू ताहिमे ओकील छलाह)
सुनलहूँ, मनुष्यक उत्पादन कारखानाकेँ,
छओ वर्षक हेतु बन्द करबाक आदेश छनि ।
आबो जँ समताक दृष्टि अपनौलनि नहि,
फोर्सली करा देल जयतनि रिटायर तखन
सृष्टिक संचालन भे' ?
विश्वक अमित लोकनि
बुद्धिक प्रसादात् सक्षम भऽ गेल छथि ।

दू

महादेव बाबाक देखि अलह नरैनी ई
सुनलहूँ अछि स्वर्गक सरकार आव अकच्छ अछि ।
पीबै' छथि भाड, आ चिबबै' छथि आफ-धथुर
भरि दिन भकुआयल, मनुआयल रहैत छथि
ओता कार्यालयसँ समयकेर कोन कथा
मासमे दू चारि दिन दर्शन टा दैत छथि ।
एम्हर संहार काज शिथिल भेल जाइत अछि
धरती माताक भार बढले चल जाइत छनि ।
जहिना उपद्रावक मनुक्ख बढल जाइत अछि
तहिना असंख्य कोट वंश बढैमान भेल ।
रच्छ रहल एतबे जे एम्हर वैज्ञानिक सभ
मोटर, बस, रेल, वायुयानक साहाय्य पावि
दुर्घटना द्वारा भार हल्लुक करैत छथि
कोटक विनाश हेतु औषधि निर्माण करा
आंशिक संहार-काज पूरा करैत छथि,
किन्तु गनगोआरि केर एक टाड, टुटनहि की !
आब जखन मनुज-जाति अपना मस्तिष्क-बले
ढेरी संहारक शस्त्रास्त्र बना लेनहि अछि
तखन पुनः महादेव बाबाकेर काज कोन ?
सुनलहूँ अछि मास दिनक बेतन अगाउ चुका
ओहो विभाग बन्द करबाक विचार छैक ।
जनिका कार्यालयसँ भार्यालय प्रियतर हो
से सभ कैलासवास करशाले' जाइत जाउ ।

मिश्र टोला, दरभंगा

समयमे मामिलाक फैसला करैत छथि । अंगरेजी पद्धतिक अनुरूप जजलोकनिक ठाठ-बाठ नहि रहैत छनि । छोट-मोट मामिलाक फैसला पुलिस एवं अन्य प्रशासकीय यन्त्रे द्वारा भऽ जाइत छैक । सिविल मामिलामे जुरी नहि होइत छैक । जनता आ पार्लमेन्टकेँ सुप्रीम कोर्टक फैसला बदलबाक अधिकार छैक । एहि शासन प्रणालीमे राष्ट्रपति आ राज्यपालक व्यवस्था नहि अछि । अपनलोकनिक मन्त्रिमण्डलक स्थानपर हिनकालोकनिकेँ पार्लमेन्ट (फेडरल एसेम्बली) द्वारा चुनल फेडरेल काउन्सिल होइत छनि जे प्रत्येक चारि वर्षपर चुनल जाइत अछि; आ एहि फेडरेल काउन्सिलकेँ एक-एक सदस्य एक-एक विभागक मन्त्री जकाँ छथि जिनका पदक अवधिक अन्तर्गत बाध्य कऽ इस्तीफा नहि देआओल जा सकैत अछि । एहि फेडरेल काउन्सिलमे सात सदस्य होइत छथि ।

पार्लमेन्टक सदस्य रेलमे तृतीय श्रेणीमे चलैत छथि—हिनकालोकनिकेँ एक बेर पूछल गेलनि जे अहाँलोकनिक तृतीय श्रेणीमे किएक चलैत छी ? तँ उत्तर देलथिन जे 'जे' कि चारिम श्रेणी नहि छैक ।' एहि विशिष्ट संविधानमे बहुभाषाभाषी स्वीस नागरिक अपन राजकाज चलबैत नेहन उन्नति कयने छथि जे आइ प्रति व्यक्तिक आमदनीमे हिनक स्थान द्वितीय छनि, प्रथम स्थान कुवैत आ अमेरिकाक, पाँचम, फ्रांसक सातम, ब्रिटेनक आठम तथा पश्चिम जर्मनीक छठम स्थान अछि ।

बर्फनय ग्राप्स पर्वत शृंखलाक पयरपर बसल लेमान झीलक दुनू कछेरपर सजल-धजल जिनेवा शहर विश्वक परम रमणीय स्थान अछि । झीलक दुनू कछेरपर पहाड़ी भूमि छैक जाहिपर कोसों रंग-विरंगी फूल—लाल, पीयर, हरियर, फुलायल अछि । कतरल-कतरल गाछ, दुभिसँ सजल पार्कपर पार्क, झीलक बहैत निर्मल जलमे नाओ-अग्निवोटपर सन्ध्या समय क्रीडा करैत जिनेवा-विश्व भरिक पर्यटककेँ आकृष्ट कऽ लैछ । चारू भाग पक्षीक कलरव, लुक्कीक खेलकूद, मयूरक नाच, ककरा ने विमोहित करत ? नागरिक-लोकनि अपन-अपन बच्चाक संग एतऽ घुमैत छथि किन्तु मुख्यतया पश्चिमी पारिवारिक जीवन केन्द्र—न्यू एण्ड आइ, सनवील-फ्लाय, गो टू स्काय, लव एण्ड डाय' वाकबीर साहेबक—तुमहम, हमतुम और न कोई, तुमहि से पुरुष हमें तोरि जोई' वा तांत्रिकक—अहं भैरवस्त्वं भैरवी ह्यावयोरस्तु सङ्गमः'क मार्गपर जोड़ी-जोड़ीसँ घड़ाजोड़ी कयने मुक्त चुम्बनक अमृतपान करैत रहैत छथि ।

जेहवे नगराजक कर्ता, नेहने नागरिक । कतहु न नोचत, डाँटि

स्मृति-गीत

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

सुमिरि सुमिरि हुनि गून
लगै' अछि चौदिस सूने-सून
जनिकर चिन्तनमे छल अनुखन देशभरिक कल्याण
जनिक अभाव बनौलक सभकेँ रुग्ण तथा अग्रिमाण
देशक कायामे की लागल तरे-तरे ई घून
सुमिरि सुमिरि हुनि गून

मनक मनोरथ सहजेँ श्लथ अछि देशक रथ पथ-हीन
हरलक के आवाल वृद्धकेर आँखिक सभ सुख नीन
जँ जँ विसरक यत्न करै' छी तँ तँ हो दुख दून
सुमिरि सुमिरि हुनि गून

जाहि ललित कौशलसँ मिथिलामे आयल छल जान
कयल अयाचक सभ याचककेँ अयाचीक सन्तान
मिथिलाकेर कण-कणकेँ देखू लगइछ आब छछून
सुमिरि सुमिरि हुनि गून

आशक एक लता लतरल छल मन छल बनल मचान
आगि डारि तकरा झरकौलक, ककर हृदय पाषाण
क्षमा करत इतिहास कदापि न, लेपत कारी-चून
सुमिरि सुमिरि हुनि गून

'अमर' यशोलतिकामे लागत सुरभित सुमन अनन्त
बीतत शिशिर, पलटि पुनि आओत मिथिलो मध्य वसन्त
देत धैर्य विलखैत लोककेँ हुनके अरजल पून
सुमिरि सुमिरि हुनि गून
लगै' अछि चौदिस सूने-सून

मिश्र टोला, दरभंगा ।

पात नहि तोड़त, ने गंदा करत ने पक्षीकेँ
हताहत करत आ ने बैसल-बैसल बैचपर
अपन नामे खोदत । वस्तु बनायव तँ कठिन
छैके, संगे ओकर सुरक्षा तँ आरो कठिन
छैक ।

हमर होटेल 'मान रिपोस' एही झीलक
सटले अछि । एकजिनियाँ छोटकी चौकी
अँटबा जोगर एक टा कोठली, बिजली,
पानि, टेलीफोन, आलमीरा, कुर्सी आदिसँ
सजल मात्र भारतीय रुपयासँ एक सय
टाका प्रति दिनक दरपर सौभाग्यसँ भेंटि
गेल । डेढ़-दू कुनमा चाउरक भात, एक टा
तरल छही माछ आ एक प्याला उसिनल
तरकारीक ओरक दाम प्रायः चालीस टाका
लगैत छैक । यावत भोजन करैत रहैत छी
तावत चालीस जोड़ सय गर्नैत रहैत छी—
होटेलक बेराकेँ से की पता ? ने ओ
आबि-आबि पूछल करैछ—किछु आन ?
कोनो शराब ? किन्तु जतऽ आर्थिक
विषमतामे मनुख अपने कवाब बनल रहैत
अछि ओकरा शराबक केँ दोसर
ओकरा सर्वदा

प्रकृतिक संबंधा विरुद्ध—से ओकरा कोन
पता ?

जीबू जिनेवा ! शान्तिक पुजेगरी,
हमर विदाइ स्वीकार करू ।

'एयर फ्रांस' सँ वर्तमान युगमे स्वतन्त्रता, समानता आतृत्वक प्रथम नारा
लगौनिहार 'पेरिस नगर'क हालमे बनल
सभसँ पैघ हवाई अड्डा जे द्वितीय महा-
युद्धक फासिस्ट विरोधी नेता एवं फ्रांसक
वर्तमान पाँचम प्रजातन्त्रिक जनकक नामपर
छनि—'चार्ल्स देगाल' पहुँचलहुँ । वर्षा
अपने पूर्वी भारत जकाँ भऽ रहल छल ।
सम्पूर्ण देशक भीतरी भाग हवाई जहाजसँ
कृषिप्रधान बुझना जाइत छल । हरित
एवं तँयार खेतक कतार जेना नक्शा
काइल-ढोरल लिखल हो । साझा बजारमे
रहि फ्रांसक कृषि पर्याप्त विकसित भेल
अछि । देगाल साहेबक स्वतन्त्र व्यक्तित्व
अमेरिकी शताब्दीसँ, पूजोवादिने ढंगसँ
सही बराबरि टकरा जाइत छल । झहरैत

(जेर पृष्ठ २८ पर)